International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Vol. 6 Issue 8, August- 2016
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.225 |

नूतन संस्कृत साहित्य में दूतकाव्य परम्परा

Dharam Singh
Assistant Professor
Deptt. Of Sanskrit
Govt.College Bhattu Kalan Distt.
Fatehabad(Hry.)

संस्कृत साहित्य में दूतकाव्य की परम्परा प्राचीन काल से ही विद्यमान है। दूत का सामान्य अर्थ है–संदेश–वाहक। जब एक व्यक्ति का संदेश दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाया जाता है, तो जो व्यक्ति संदेश पहुँचाता है, उसे दूत कहा जाता है। अगर संदेश वाहक कोई स्त्री है, तो उसे दूती कहा जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने अपने अमर ग्रंथ साहित्य–दर्पण में 'दूत' का लक्षण देते हुए कहा है कि–

निसृष्टार्थो–मितार्थश्च तथा संदेशहारकः।

कार्यप्रेष्यस्त्रिधा दूतो दूत्यश्चापि तथाविधाः।।[1]

विश्वनाथ के अनुसार दूत तीन प्रकार के होते हैं। 1. निसृष्टार्य, 2. मितार्थ, 3. संदेशहारक।

इन तीन प्रकार के दूतों तथा उनके कार्यों का वर्णन करते हुए विश्वनाथ कहते हैं–

1. निसृष्टार्थ दूतः– निसृष्टार्थ दूत वह दूत है, जो नायक तथा नायिका के मन की बात जान लेता है तथा स्वयं ही उनकी जिज्ञासाओं तथा प्रश्नों का समाधान कर देता है। इस प्रकार के दूत की एक अन्य विशेषता यह होती है कि यह दूत संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त अन्य कार्यों को भी पूर्ण करने में सक्षम होता है–
   उभयोर्भावमुन्नीय स्वयं वदतिचोत्तरम्।
   सुश्लिष्टं कुरूते कार्यं निसृष्टार्थस्तु स स्मृतः।।[2]
2. मितार्थ दूत–विश्वनाथ ने मितार्थ दूत को दूसरे प्रकार का दूत स्वीकार किया है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह दूत बहुत कम कार्य पूर्ण करता है। किन्तु उसे जिस निश्चित कार्य के लिए भेजा जाता है, वह कार्य मितार्थ दूत अवश्य पूर्ण करता है।
   मितार्थभाषी कार्यस्य सिद्धकारा मितार्थकः।[3]
3. संदेशहारकः–विश्वनाथ ने संदेशहारक दूत को तीसरे प्रकार का दूत स्वीकार किया है। इस प्रकार का दूत उतनी ही बात करता है, जितनी उसे बताई गई हो। बताई गई बात के अतिरिक्त वह कुछ भी बात नहीं करता है–
   यावद्भाषित संदेशहारः संदेशहारकः।[4]

जहाँ तक दूत शब्द की व्युत्पत्ति का प्रश्न है–दूत शब्द (दु गतौ) धातु के साथ क्त प्रत्यय जोड़ने के साथ निष्पन्न हुआ है।

अमरकोश नामक ग्रंथ में एक अन्य स्थल पर बताया गया है कि–

दूतानिभ्यां दीर्घश्च[5]

अर्थात् दु के ' उकार' को दीर्घ होकर दूत शब्द की व्युत्पत्ति होती है।

अमरकोश में ही एक अन्य स्थल पर 'दूत' की व्युत्पत्ति के विषय में बताया गया है कि–

स्यात्संदेशहरो दूतः[6]

अर्थात् संदेश पहुँचाने वाले को ही दूत कहा जाता है।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने 'अभिधान चिन्तामणि' नामक ग्रंथ में दूतकाव्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि–

दूतः संदेशहारकः। दूयते ऽनेन यथोक्त वादित्वम् पर इति दूतः 'शीरी' संदेशं मुख्याख्यानं हरति संदेश वाहकः।[7]

प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी ने दूतकाव्य का लक्षण देते हुए कहा है कि–

दूतं कृत्वा निर्सर्गांक नरं वा पक्षिणं पशुम्।
स्व प्रियं प्रति संदेश प्रेष्यते दूतसंज्ञकें।।
अवायोऽव्यक्तवायोऽपि वर्ण्यतां दूतरुपिणः।
न प्रयान्तु न संदेशं प्रियार्थं श्रावयन्तु ते।।
मेघदूते भवेन्नाम दूतो मेघे न किन्तु सः
निशब्दो यक्षिणीं वक्ति कालिदास्य वर्णने
विप्रलम्भत्कान्येव प्रायेणै तानि चासते
भुवो रागश्च राष्ट्रस्च भक्तिर्विन्यस्यतेऽधुना।।

अर्थात् जब अपने प्रिय के प्रति संदेश भेजा जाता है, तो उसे दूतकाव्य कहा जाता है। इस काव्य में किसी व्यक्ति, पशु या पक्षी को भी दूत बनाया जा सकता है। दूत काव्य को 'निसर्ग' में विभाजित किया जाता है। दूतकाव्य में कोई भी दूत अपने संदेश को अव्यक्त या व्यक्त रूप में सम्प्रेषित कर सकता है। वह यह कहकर संदेश प्रकट कर सकता है कि मैं तुम्हारे प्रिय का संदेश तुम्हें सुना रहा हूँ। जिस प्रकार मेघदूत नामक काव्य में कालिदास ने यक्ष का संदेश यक्षिणी तक सम्प्रेषित किया है। दूत काव्य की मुख्य विषय–वस्तु विप्रलम्भ (वियोग) श्रृंगार के इर्द–गिर्द घूमती है। दूत के संदेश में अत्यधिक राग (प्रेम) प्रकट करना चाहिए। आजकल के दूत–काव्यों में राष्ट्र–भक्ति या राष्ट्र प्रेम को भी प्रेम किया जा सकता है।

दूतकाव्य की परम्परा का श्रीगणेश कब हुआ, इसके निश्चित प्रमाण हमें ऋग्वेद में मिलते हैं। ऋग्वेद के पंचम मण्डल में रात्रि को दूत बनाने का कार्य सौंपा गया है।

ऋग्वेद में एक अन्य स्थल पर 'सरमा–पणि संवाद' में सरमा को पणियों के पास दूत बनाकर भेजा गया है। तक सरमा इन्द्र की संदेशवाहिका बनकर पणियों के पास जाती है। जब मणि उससे पूछते हैं कि तुम कौन हो, तो वह कहती है–

इन्द्रस्थ दूतीरिषिता चरामि मह इच्छत्ती निधीन्व।
अतिष्कदो भियसा तन्न आव तथा रसाया अन्तरं पयांसि।।[8]

अर्थात्–हे पणियों! मैं इन्द्र की दूती हूँ। उन्हीं के द्वारा भेजी गई मैं महान् धन की इच्छा करती हुई यहाँ भ्रमण कर रही हूँ। मैं गाय रूपी धन प्राप्त करने के लिए यहाँ आई हूँ। मेरे कूदने (अतिक्रमण करने) के डर से उस रसा नदी के जल ने मेरी सहायता करके मुझे बचाया है। इस प्रकार मैं रसा नदी के जल को पार करके यहाँ आई हूँ।

दूतकाव्य को आरम्भ करने का श्रेय कालिदास को जाता है। कालिदास ने मेघदूत नामक काव्य ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में एक यक्ष अपनी प्रिया के पास संदेश भेजता है। वह अपने संदेशवाहक के रूप में मेघ को दूत बनाकर भेजता है। दूतकाव्य की यह परम्परा रामायण तथा महाभारत में भी विद्यमान है। रामायण में हनुमान श्रीराम का संदेश लेकर सीता के पास जाते हैं। इसी प्रकार महाभारत में श्रीकृष्ण पाण्डवों का संदेश लेकर कौरवों के पास जाते हैं। महाभारत के ही नल–उपाख्यान में हंस–दमयन्ती के संवाद भी पूर्ण रूप से दूत–काव्य की श्रेणी में आते हैं–

दमयन्ति नलो नाम निषधेषु महीपतिः।
अश्विनो सदृशो रूपे न समास्तस्य मानुषाः।।[9]

श्रीमद्भगवद्गीता के दशम स्कंध के 46 वे अध्याय में श्रीकृष्ण उद्धव को गोपियों के पास भेजता हैं–

वृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयित सखा।
शिष्यो बृहस्पते साक्षाषुद्धयो बुद्धिसत्तम।।[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कि दूतकाव्य की परम्परा प्राचीन काल में अति समृद्ध थी। अनेक महाकवि दूतकाव्य की परम्परा का पालन करते थे तथा उन्हें अपने इस काव्य–कर्म में अपेक्षित सफलता भी मिलती है। दूतकाव्य की इस परम्परा का पालन आधुनिक युग के कवियों ने भी बड़ी सफलतापूर्वक किया है। दूतकाव्य की इस परम्परा का प्रवाह अभी भी

निरन्तर अजस्र रूप में प्रवाहित है तथा समकालीन समय के अनेक संस्कृत रचनाकारों ने दूतकाव्य पर अपनी लेखनी चलाई है।

1. जगतगुरु रामभद्राचार्य ने 'मृंगटूमम्' नामक दूत काव्य की रचना की, जिसमें वे एक मृंग (भँवरें) को दूत बनाकर अपने संदेश सम्प्रेषित करते हैं। इस ग्रंथ का प्रकाशन सन्–2004 ई० में हुआ।
2. श्री गोपेन्द्रनाथ स्वामी ने 'पादपदूतम्' नामक दूतकाव्य की रचना की, जिसमें वे पादप (पौधों) को दूत बनाकर अपना संदेश भेजते हैं।
3. वनेश्वर पाठक ने 'प्लवड़् दूतम' नामक दूतकाव्य की रचना की। इस दूतकाव्य में वे प्लवड़ों अर्थात् कीट–पतंगों को अपना संदेशवाहक बनाते हैं तथा अपनी प्रिया के पास अपना संदेश भेजते है।
4. श्री विष्णुदास ने 'मनोदूतम्' नामक एक दूतकाव्य की रचना की। इस काव्य ग्रंथ मे कवि ने अपने मन को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास अपने हृदयगत भावों को पहुँचाया है। मानव के मन को दूत बनाकर भेजने का यह अभिनव तथा नूतन प्रयोग अपने आप में सुन्दर प्रयोग है।
5. श्री दयानिधि मिश्र ने सूर्यदूतम् नामक एक दूतकाव्य की रचना की। इस काव्य में कवि ने सूर्य को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास भेजा है अर्थात् सूर्य को संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया है। सूर्य की रश्मियाँ सम्पूर्ण पृथ्वी पर व्याप्त है। कवि को लगता है कि सूर्य की रश्मियाँ को उसकी प्रिया का ठिकाना मालूम है। अतः वह सूर्य को ही दूत बना देता है तथा अपना संदेश प्रेषित करता है।
6. श्री नित्यानंद शास्त्री ने हनुमद् दूतम नामक दूत काव्य की रचना की। इस दूत काव्य में हनुमान को दूत के रूप में चित्रित किया गया है। हनुमान राम के संदेश को सीता तक पहुँचाते है। इस ग्रंथ का प्रकाशन 1985 ई० में हुआ था।
7. श्री इच्छाराम द्विवेदी ने 'दूतप्रतिवचनम्' नामक दूतकाव्य की रचना की। इस दूतकाव्य के दूत के संदेश को प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ की अन्य विशेषता यह है कि दूत को संदेश लेकर आता है, बदलें उसका प्रत्युत्तर लेकर जाता है। इस ग्रंथ का प्रकाशन 1986 ई० में हुआ था।
8. श्री रामचन्द्र हरिशरण शांडिल्य ने कामदूतम् नामक 'दूतकाव्य' की रचना की। इस दूतकाव्य में 'कामदेव' को दूत बनाकर भेजा जाता है। काम स्त्री तथा पुरूष के सम्बंधों में सबसे बड़ा नियामक है। जब काम की भावना जागृत होती है, तो व्यक्ति अपनी प्रिया को स्मृत करता है, तब वह काम से मोहित हो उठता है। इस स्थिति में यदि प्रेमी की प्रेमिका उसके पास नहीं हैं, तो वह व्याकुल हो उठता है। प्रेमी के हृदय की व्याकुलता को ही (विशेषकर काम सम्बंधी व्याकुलता) प्रस्तुत ग्रंथ की भावभूमि बनाया गया है। इस ग्रंथ का प्रकाशन–1988 ई० में हुआ था।

9. श्री मोहनलाल शर्मा पाण्डेय ने 'पत्रदूतम' नामक दूतकाव्य की रचना की। इस दूतकाव्य में कवि ने अपने मन के भाव को एक पत्र में लिखा तथा उसी पत्र को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास भेजा है। इस ग्रंथ का प्रकाशन 1999 ई० में हुआ था।
10. श्री वागीश शर्मा ने 'चकोरदूतम्' नामक एक दूतकाव्य की रचना की। इस काव्य में कवि एक चकोर पक्षी को अपना दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास भेजता है।

निष्कर्ष:– निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि संस्कृत साहित्य में दूतकाव्य की एक सुदीर्घ परम्परा विद्यमान है। संस्कृत साहित्य में दूतकाव्य की यह परम्परा ऋग्वेद से प्रारम्भ होती है। कालिदास के 'मेघदूत' नामक दूतकाव्य को दूत–काव्यों का आधार ग्रंथ कहा जा सकता है। इसी ग्रंथ के आधार पर तथा इसकी विषय–वस्तु को ग्रहण करके अनेक प्रकार के दूतकाव्यों की रचना की गई तथा दूतकाव्यों के रचना–कर्म की यह प्रक्रिया अभी भी विद्यमान है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, मोतीलाल, बनासीलाल, दिल्ली, पंचम संस्करण, 3/47
2. वही–3/48
3. वही–3/49
4. वही–3/49
5. अमरकोश– मोतीलाल, बनासीलाल, दिल्ली, 3/90
6. वही–2/6/16
7. आचार्य हेमचन्द्र, अभियान चिन्तामणि–3/396
8. ऋग्वेद, संस्कृति संस्थान, बरेली –1962
9. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर–53/27
10. श्रीमद्भगवत्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर –10/46